वृत्तपत्राचे नाव :-
वृत्तपत्र प्रकाशन ठिकाण :- देवगड
वृत्तपत्र पान नं.:- 7
दिनांक :- 23/04/2008
कटिंग नंबर:-

– महर्षि महेश योगी

भारत की वास्तविक पहचान उसके वैदिक धर्म से होती है

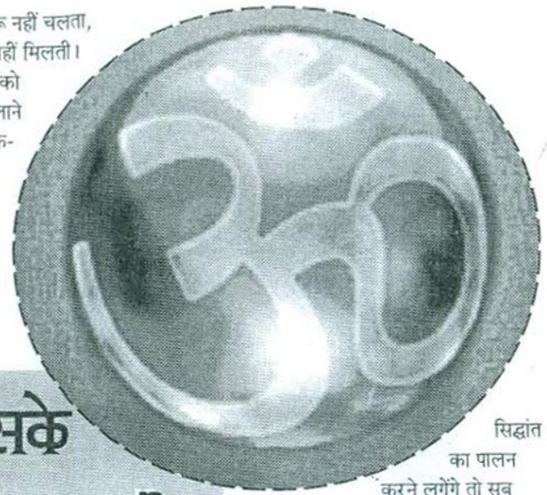

भारत में अक्सर वेद और वैदिक-ज्ञान की बात होती है, वैदिक-परंपरा, वैदिक-धर्म के महत्व की बात होती है। यह वेद की सत्ता क्या है और वेद का क्षेत्र कहाँ है? यह प्रश्न उठना आवश्यक है। भावातीत सत्ता वेद की सत्ता है और भावातीत क्षेत्र वेद का क्षेत्र है। भावातीत सत्ता पर अधिकार से वेद का ज्ञान हो जाता है। सर्वज्ञ-सर्वसमर्थ वैदिक सत्ता पर अधिकार हो जाता है, तो हर क्षेत्र में सर्वज्ञता और सर्वमसर्थता व्यावहारिकता में उतर आती है। भावातीत सत्ता पर अधिकार कैसे होता है? यह होता है अपने वैदिक-धर्म में रहने से, वैदिक-परंपरा में बताये गये विधानों से। वैदिक-परंपरा में वैदिक-धर्म क्या है - ध्यान, योग, भक्ति, यज्ञ, अनुष्ठान, वेदपाठ, मंत्रजाप सहित सभी वेद विधायें वैदिक-धर्म हैं, जिनका पालन करने से सर्वज्ञता और सर्वसमर्थता आ जाती है अर्थात भावातीत सत्ता पर अधिकार प्राप्त हो जाता है। जब भावातीत ध्यान करते हैं, तो पूर्ण ज्ञान के क्षेत्र में आ जाते हैं, पूर्णता के क्षेत्र में आ जाते हैं, वेद के क्षेत्र में आ जाते हैं। कुछ लोग कहेंगे कि यह तो बड़ा कठिन है। वास्तव में ऐसा नहीं है, जो भी अपनी वेदभूमि भारत की परंपरा में रहता है, वह जानता है। अपने भारत की ज्ञान-परंपरा में गुरुजन दिशा-निर्देश देते हैं, युक्ति बताते हैं। कोई बड़ा ताम-झाम, कोई बड़ी ट्रेनिंग नहीं करनी पड़ती। वैदिक-परंपरा में चले आ रहे वैदिक-ज्ञान के बारे में गुरु बताते हैं, वैदिक जन बताते हैं और बड़ी सरलता से बताते हैं, बड़ा सरल है।

भारतीय इसे अपनी ज्ञान-परंपरा में जानते आये हैं। देवभूमि भारत तो हमेशा से प्रतिभारत है। इसलिए उसमें सम्पूर्ण ज्ञान है और सम्पूर्ण कर्म करने का ज्ञान है। जो लोग इस परंपरा से भटक गये, उन्हें ही मुश्किल लगता है। ऐसे ही लोग वेद-परंपरा को और वैदिक-विधानों को अवैज्ञानिक बताते हैं। उनसे पूछा जाना चाहिए, जिस आधुनिक विज्ञान और उसकी वैज्ञानिकता के आधार पर वे भौतिक जगत् की बहुत सारी व्यवस्थाओं, सिद्धांतों को जानते और मानते हैं, फिर वे क्यों गड़बड़ी करते रहते हैं। ऐसा इसीलिये है, क्योंकि वे विज्ञानों के विज्ञान वेद-विज्ञान को नहीं जानते-मानते हैं, जो अपने धर्म से हट गये, फिर वे कितने ही तर्क देंगे, कुछ सही नहीं चलेगा। सही तभी होगा, जब धर्म का मार्ग अपनायेंगे। मनुष्यकृत विज्ञान और विधानों से ही सब कुछ सुचारू नहीं चलता, सफलता नहीं मिलती। सारी सृष्टि को सुचारू चलाने वाले वैदिक-धर्म से, वेद-विज्ञान के वैदिक विधानों से वैदिक सिद्धांत का पालन करने लगेंगे तो सब ठीक होने लगेगा, सफलता मिलने लगेगी।

> ***भारत के गाँव-गाँव में यह विद्या प्रचलित है। इसलिए यदि भारत को बनाना है, तो वैदिक-धर्म को अपनाना होगा, वेद के सिद्धांतों को अपनाना होगा। अपने भारत की वैदिक ज्ञान-परंपरा के सनातनी मार्ग को अपनाना होगा।***

अपने भारतीय वैदिक ज्ञान से, दैवी आराधना से, दैवी अनुष्ठानों से, त्रिकाल संध्यावंदन से, यज्ञ व अनुष्ठान से, वेदपाठ से, मंत्रजाप से विभिन्न त्योहारों-उत्सवों पर विभिन्न देवी-देवताओं के लिए निर्धारित दिन पर उनके शक्ति-जागरण के विधानों के आयोजन से चेतना में सर्वगुण सम्पन्नता जागृत होती है। भारत के गाँव-गाँव में यह विद्या प्रचलित है। इसलिए यदि भारत को बनाना है, तो वैदिक-धर्म को अपनाना होगा, वेद के सिद्धांतों को अपनाना होगा। अपने भारत की वैदिक ज्ञान-परंपरा के सनातनी मार्ग को अपनाना होगा।

सिद्धांतों का आधार पाकर ही सब कुछ सुचारू चलता है, सब कुछ सफल होता है। धर्म सबको जोड़ता है, सिद्धांत सबको जोड़ता है। सिद्धांत से भटक गये, सब कुछ गड़बड़ हो गया। धर्म को अपना लेंगे तो धर्म का पालन करने लगेंगे। सिद्धांत को अपना लेंगे,